पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0
(राज्यपाल सूचना परिसर)

———

राज्यपाल सिटी मॉन्टेसरी स्कूल, लखनऊ द्वारा आयोजित 14वें अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव 2025 के समापन समारोह में हुईं सम्मिलित

———

यह हम सबका नैतिक दायित्व है कि हम गरीब और वंचित परिवारों के बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ें

———

विभिन्न योजनाओं के माध्यम से किसानों को सशक्त बनाने का कार्य किया जा रहा है

———

जब देश की आधी आबादी के कौशल और सामर्थ्य का उपयोग सही दिशा में होगा तभी देश विकसित होगा

———

टेक्नोलॉजी का उपयोग समाज को सही दिशा देने के लिए किया जाना चाहिए

———

जब देश आजादी के सौ वर्ष का उत्सव मनाएगा तब वर्तमान पीढ़ी के युवा उस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बनेंगे और देश को उस मुकाम तक पहुँचाने की जिम्मेदारी भी इन्हीं के कंधो पर है

———

श्रमजीवी वर्ग का कौशल, देश की बहुमूल्य सम्पत्ति है, इन्हें रोजगार के अवसर प्रदान कर उनके हुनर का देश की समृद्धि के लिए सदुपयोग करना चाहिए

———

जब कोई बेटी बहू बनकर हमारे घर आती है तो हमें उसे बेटी की तरह प्यार देना चाहिए तथा दहेज प्रथा को समाज से समाप्त करना चाहिए

—राज्यपाल, श्रीमती आनंदीबेन पटेल

———

लखनऊ : 13 अप्रैल, 2025

प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल आज सिटी मॉन्टेसरी स्कूल, लखनऊ द्वारा आयोजित 14वें अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव 2025 के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुईं।

इस अवसर पर राज्यपाल जी ने अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव में चयनित उत्कृष्ट फिल्मों को पुरस्कृत किया और कहा कि इस तरह के आयोजनों से बच्चों की रचनात्मकता को नई दिशा मिलती है। उन्होंने बाल फिल्म महोत्सव की सराहना करते हुए कहा कि इस फिल्म फेस्टिवल के माध्यम से बच्चों ने अवश्य ही बहुत कुछ सीखा होगा, जो भविष्य में उनके जीवन को सकारात्मक दिशा देगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस प्रकार की प्रेरणा से बच्चे आगे चलकर समाज के लिए छोटी–छोटी प्रेरणादायक फिल्में बनाएंगे, जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य करेंगी। उन्होंने एचपीवी वैक्सीन लगवा चुकी बालिकाओं को सम्मानित किया तथा बालिकाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की सराहना की। समारोह के प्रारंभ में विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सर्वधर्म प्रार्थना प्रस्तुत की गई, जो सभी धर्मों के प्रति सम्मान और समन्वय का संदेश देती है। इसके साथ ही बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भी सुंदर प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी ने कहा कि बच्चों द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना प्रेरणा देने वाली है और हमें अपने जीवन में इसे शामिल करना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि हम प्रातः उठते ही अपने गुरु, माता–पिता और बुजुर्गों को नमन करें, उनका आशीर्वाद लें, तो हमारा पूरा दिन शुभ और सफल हो जाता है। उन्होंने बच्चों की प्रस्तुति में की गई मेहनत की प्रशंसा करते हुए उन्हें उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

राज्यपाल जी ने अपने संबोधन में कहा कि मैं स्वयं भी एक अध्यापिका रही हूँ, और हमारे स्कूल में भी सर्वधर्म प्रार्थना नियमित रूप से होती थी। उन्होंने कहा कि विद्यालयों में आयोजित विविध प्रकार की प्रवृत्तियाँ बच्चों के विशेष कौशल को उजागर करने का अवसर प्रदान करती हैं। उन्होंने शिक्षकों और अभिभावकों से कहा कि वे बच्चों को उनकी प्रतिभा और रुचि के अनुसार उचित दिशा देने का प्रयास करें। यदि कोई बच्चा खेल में अच्छा है तो उसे खेलने के लिए प्रेरित करना चाहिए, और यदि कोई बच्चा संगीत या पढ़ाई में रुचि रखता है, तो उसे उसी दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि सरकारी स्कूल हो या निजी विद्यालय, सभी जगह यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि बच्चों को उनके कौशल के अनुरूप मार्गदर्शन और अवसर प्राप्त हों, ताकि वे अपने जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें।

कार्यक्रम में लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा 'विकसित भारत' और 'दहेज प्रथा' जैसे सामाजिक विषयों पर प्रभावशाली भाषण प्रस्तुत किए गए। राज्यपाल जी ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि इस प्रकार के विषयों से बच्चों में समझ, संवेदनशीलता और सामाजिक चेतना का विकास होता है।

उन्होंने कहा कि कक्षा 12 तक तो विद्यालयों में विविध गतिविधियाँ होती हैं, लेकिन जब छात्र कॉलेज या विश्वविद्यालय पहुंचते हैं, तो ऐसी प्रवृत्तियाँ बहुत कम दिखाई देती हैं। उन्होंने बताया कि वे राज्य विश्वविद्यालयों की कुलाधिपति होने के नाते इस दिशा में प्रयासरत हैं और अब उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों में विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ आयोजित की जा रही हैं, जिससे विद्यार्थी अपनी रचनात्मकता, विचारशीलता और सामाजिक सहभागिता को आगे बढ़ा सकें।

उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि वह जहां भी जाती हैं, कुछ न कुछ सीखने का प्रयास अवश्य करती हैं। उन्होंने अपने जेल भ्रमण के अनुभव साझा करते हुए बताया कि अधिकांश महिलाएं दहेज के मामलों में जेल में बंद हैं और उनके साथ उनके छोटे–छोटे बच्चे भी जेल की सजा भुगत रहे हैं, जबकि इन बच्चों ने कोई अपराध नहीं किया। यह स्थिति उन्हें अत्यंत दुखी और चिंतित करती है। उन्होंने बताया कि जब वे जिले के भ्रमण पर जाती हैं, तो उनके आगमन से पूर्व कक्षा 10वीं, 12वीं और कॉलेज के छात्रों को जेल का भ्रमण कराया जाता है। जब ये छात्र बाद में राज्यपाल से मिलते हैं, तो उनके विचारों में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलता है। वे कहते हैं कि अब हम न तो दहेज लेंगे और न देंगे, और न ही दहेज लेने वालों को समर्थन देंगे। कैदियों से संवाद और जेल का अनुभव बच्चों को प्रेरणा देता है कि जीवन में कोई ऐसा कार्य न करें जिससे उन्हें जेल जाना पड़े।

राज्यपाल जी ने बताया कि उन्होंने राज्य के अनेक कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में 'दहेज प्रथा', 'बाल विवाह' और 'विकसित भारत' जैसे विषयों पर प्रेरणादायक कार्यक्रम आयोजित करवाए हैं, ताकि युवा वर्ग सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जागरूक हो सके। उन्होंने कहा कि जब कोई लड़की बहू बनकर हमारे घर आती है, तो हमें उसे बेटी की तरह प्यार देना चाहिए, और दहेज जैसी मांगें समाज से समाप्त करनी चाहिए।

राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी ने अपने प्रेरणादायी संबोधन में कहा कि सबसे पहले बच्चों को एक अच्छा इंसान बनाना चाहिए। जब बच्चे अच्छे इंसान बनेंगे, तभी वे आगे चलकर डॉक्टर, इंजीनियर या अन्य पेशेवर बनकर समाज की सेवा कर सकेंगे। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि यह हम सबका नैतिक दायित्व है कि हम गरीब और वंचित परिवारों के बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ें। जो बच्चे भीख मांगने जैसी गतिविधियों में लिप्त हैं, उन्हें वहां से निकालकर स्कूल की दहलीज तक पहुंचाना हमारा कर्तव्य होना चाहिए। सच्चा विकसित भारत वही है जहां न कोई गरीब रहे, न कोई अशिक्षित, न कोई भूखा, तभी भारत वास्तव में समृद्ध और सुखी नागरिकों वाला देश बन सकेगा।

राज्यपाल जी ने 'विकसित भारत' की संकल्पना को सामने रखते हुए कहा कि हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम सभी को शिक्षा, संस्कार और सम्मान से जोड़ें और इसी दिशा में निरंतर कार्य करें। उन्होंने 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भारतीय परंपरा का उल्लेख करते हुए कहा कि हमारी संस्कृति समस्त विश्व को एक परिवार मानने की है। उन्होंने प्रधानमंत्री जी द्वारा प्रस्तुत विकसित भारत के स्तंभों पर

प्रकाश डालते हुए कहा कि किसानों की समृद्धि के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारें विभिन्न योजनाओं के माध्यम से उन्हें सशक्त बनाने का कार्य कर रही हैं। हमें भी किसानों के उत्थान और समृद्धि के लिए संकल्पित होकर कार्य करना चाहिए, क्योंकि किसान ही देश की रीढ़ हैं।

उन्होंने विकसित भारत के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं' की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि जब देश की आधी आबादी हमारी महिलाओं के कौशल और सामर्थ्य का उपयोग सही दिशा में होगा, तभी भारत सच्चे अर्थों में विकसित बन सकेगा। सरकार महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे लाने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि आज हमारे गांवों की महिलाएं भी टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करते हुए ड्रोन चला रही हैं और आत्मनिर्भर बनकर देश के विकास में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि वे असंभव को संभव बना सकती हैं और हर दायित्व को अत्यंत कुशलता और निष्ठा के साथ निभा सकती हैं। महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए हमें और अधिक अवसर, समर्थन और प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए, ताकि उनकी प्रतिभा और ऊर्जा का संपूर्ण उपयोग देश की प्रगति में हो सके।

उन्होंने कहा कि जब भारत अपनी आज़ादी के 100 वर्ष का उत्सव मनाएगा, तब वर्तमान पीढ़ी के युवा उस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बनेंगे, और देश को उस मुकाम तक पहुंचाने की जिम्मेदारी भी इन्हीं के कंधों पर है। युवा अपनी कमियों को पहचानें, उन्हें दूर करें और अपनी विशेषताओं को पहचानकर देश के निर्माण में योगदान दें। उन्होंने कहा कि युवाओं के पास टेक्नोलॉजी जैसा सशक्त साधन है, जिसके सकारात्मक उपयोग से समाज की अनेक समस्याओं का समाधान संभव है। टेक्नोलॉजी का उपयोग समाज को सही दिशा देने के लिए करें, न कि उसे भ्रमित या परेशान करने के लिए। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि समाज को एक बेहतर जीवन देने का कार्य हमारे युवाओं के माध्यम से ही साकार हो सकता है, बशर्ते वे अपनी ऊर्जा, प्रतिभा और तकनीकी समझ को राष्ट्रहित में लगाएं। उन्होंने टेक्नोलॉजी के गलत उपयोग पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि जब तकनीक का दुरुपयोग किया जाता है, तो उससे अपराध बढ़ते हैं, जिससे ऊर्जा और समय व्यर्थ होता है और अंततः देश के विकास में बाधा उत्पन्न होती है। यह हम सभी शिक्षकों, अभिभावकों और समाज का दायित्व है कि हम विद्यार्थियों को यह सिखाएं कि टेक्नोलॉजी का उपयोग जनकल्याण और राष्ट्र निर्माण में कैसे किया जा सकता है।

उन्होंने अपने संबोधन में समाज के उन गरीब एवं श्रमजीवी वर्ग का विशेष रूप से उल्लेख किया, जो बिना किसी औपचारिक शिक्षा या प्रशिक्षण के केवल अपने अनुभव और कौशल के बल पर उत्कृष्ट निर्माण कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि इनका कौशल हमारे देश की बहुमूल्य संपत्ति है और हमें ऐसे लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान कर उनके हुनर का देश की समृद्धि के लिए सदुपयोग

करना चाहिए। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि हमें अपने देश को आगे बढ़ाने के लिए ऐसे लोगों को साथ लेकर सामूहिक रूप से संकल्प लेना चाहिए।

इस अवसर पर सिटी मॉन्टेसरी स्कूल की संस्थापिका एवं निदेशिका डॉ0 भारती गांधी, प्रबन्धक सिटी मॉन्टेसरी स्कूल प्रो0 गीता गांधी किंगडन, फिल्म जगत से जुड़े गणमान्यजन, विद्यालय की समस्त शाखाओं के शिक्षकगण, प्रधानाध्यापिकाएं एवं विद्यार्थी, अन्य विद्यालयों के बच्चे, लखनऊ विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों सहित अन्य गणमान्य उपस्थित थे।

———————

सम्पर्क सूत्र
डॉ0 संगीता चौधरी,
सूचना अधिकारी, राजभवन
मो0–9161668080

14th
Childrens